गाथा (GAATHA)
स्त्री अस्मिता और विमर्श की सहकर्मी-समीक्षित, अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

ISSN : 3049-3463(Online)
Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No.- 01-06
©2025 Gaatha
https://gaatha.net.in
Author :

श्रीमती कंचन कुमारी
सहायक प्राध्यापक-हिन्दी विभाग,
श्री राधा कृष्ण गोयनका महाविद्यालय,
सीतामढ़ी, बिहार, 843302.
बाबा भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर.

Corresponding Author :

श्रीमती कंचन कुमारी
सहायक प्राध्यापक-हिन्दी विभाग,
श्री राधा कृष्ण गोयनका महाविद्यालय,
सीतामढ़ी, बिहार, 843302.
बाबा भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर.

भारतीय समाज में नारी की भूमिका:- समस्याएँ और समाधान

भूमिका :- भारतीय समाज में नारी की भूमिका हम प्राचीन काल से ही देख सकते हैं। प्राचीन समय अर्थात् वैदिक काल में नारी की भूमिका एवं उनका स्थान काफी सम्मान जनक था। भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठतम् परिकल्पना अर्धनारीश्वर के रूप में नाभिव्यक्त होती है। नारी को देश का ही नहीं बल्कि सृष्टि रंगमंच का भी श्रृंगारिणी माना गया है: " जीवन मरु में शीतल जलधार है नारी, विधाता की सृष्टि का श्रृंगार है नारी, यह बहिना है, माता है, निर्माता है, पूजनीया सर्वदा, दिव्य गुणों की गुलदस्ता अवतार है नारी।"(1)

प्राचीन साहित्य में नारी की विरता की कहानियाँ भरी पड़ी हैं। एक उदाहरण हमें राजा दशरथ का प्राप्त होता है जब चक्रवर्ती राजा दशरथ युद्ध के दौरान शत्रुओं से घिर चुके थे और उस समय इनकी सबसे छोटी और तीसरी पत्नि महारानी कैकेयी जो उस वक्त इनके रथ की सारथी बनी हुई थीं उनको रथ सहित अत्यन्त कुशलता से शत्रु सेनाओं के बीच से बाहर निकाल पाने में सक्षम हुई थीं। भारत के अतिरिक्त विश्व की किसी भी अन्य प्रमुख संस्कृति में ऐसा देखने को नहीं मिलता जहाँ समाज ने युवतियों को अपने नेता के रूप में या सेनापति के रूप में स्वीकार किया हो और उनके अधीनरहकर युद्ध किया हो। इसलिए नारी के बारे में हम इतना अवश्य कह सकते हैं।:- "विदुषी नारी तो मुर्दो को जिला सकती है, उंगली से हिमालय को हिला सकती है, ये देश है वो देश, जहां नारी मां बनकर भगवान को भी गोदी में खिला' सकती है। (2)

हमारे समाज में इतिहास से अब तक नारी की भूमिका कितनी और कहाँ-कहाँ रही इसका पूर्ण रूप से संकलन और संग्रह करना बहुत कठिन लगता है। परन्तु उसके व्यक्त्वि के प्रति समाज का इतना आदर और स्नेह प्रकट करना यह सिद्ध करता है कि समाज के मानव विकास में

इनकी अहम भूमिका रही है। महर्षि वाल्मीकि प्रणीत श्रीमाल्मीकीय रामायण में भी नारी को गौरवमयी स्थान प्राप्त है। केवल ऋग्वेद में ही नहीं बल्कि अन्य प्राचीन ग्रंथों में भी महिला का महत्व पुरुष से अधिक रहा है। एक नहीं अनेक ऐसे आख्यान वैदिक एवं लौकिक साहित्य प्रमाणित होता है कि नारी का में मिलते हैं जिनसे यह स्थान सम्मानजनक तो था ही, साथ ही नारी को सौभाग्य का सूचक भी माना जाता था, वैदिक काल में नारी को सामान्य शिक्षा-दीक्षा ही नहीं, बल्कि अस्त्र-शस्त्र संचालन तथा युद्ध कला तक की शिक्षा दी जाती थी और राजनीति में भी वह भाग लेती थी। "आज भी,"तमसो मा ज्योतिर्गगय, मृत्यो: मां अमृतं गमय' आदि उसके प्रवचनों से ज्ञात होता है कि गृह की वस्तुमात्र समझी जानेवाली स्त्री ने कभी जीवन को कितनी गम्भीरता -मयी दार्शनिक दृष्टि से देखने का प्रयत्न किया था।(3)यदि हम शिक्षा की तरफ अपना ध्यान करें तो वैदिक काल से नारीयों को अध्ययन, अध्यापन एवं ब्रम्हचर्य तक में उनकी भूमिका दृष्टव्य होती है। वैदिक शिक्षा में हमें मैत्रेयी और गार्गी जैसी विदुषियों के उदाहरण मिलते हैं। जिन्हें वेदों के अध्ययन का अधिकार था एवं वे यज्ञादी में भी भाग लेती थीं। उस समय स्त्री साधु को ऋषिका या ब्रम्हवादिनी कहा जाता था जिसमें रोमा, लोपामुद्रा, अपाला, विश्ववारा का नाम उल्लेखनीय है। उत्तर वैदिक काल के जो प्रमाण मिलते हैं उससे स्पष्ट होता है कि नारी को शिक्षा प्राप्त करने पर कोई प्रतिबंध नहीं था उपनिषदों में शिक्षित स्त्रियों के अनेक उदाहरण हैं। बृहदारण्यक उपनिषद में जनक की सभा में गार्गी और याज्ञवल्क्य के श्रेष्ठ वाद - विवाद का उल्लेख है। । नारियों को अध्ययन काल में उसे ब्रम्हचर्य का पालन करना पड़ता था गृह कार्य के अतिरिक्त कन्याओं को ललित कलाओं की शिक्षा दी जाती थी। स्त्रियों को साहित्य और दर्शन के अतिरिक्त चित्रकला की शिक्षा दी जाती थी। गृहसूत्रों से विदित होता है कि उनका उपनयन के साथ-साथ समावर्तन संस्कार भी होता था। इससे लगता है कि सूत्रयुग में पुरुषों की तरह स्त्रियाँ भी शिक्षा प्राप्त करने के निमित्त ब्रम्हचर्य का जीवन व्यतीत करती थीं। प्रऋषि तर्पण के समय, गार्गी, वाचक्नवी, सुलभा "मैत्रेयी, बड़वा, प्रतिकेशी आदि प्रऋषि नारियों के भी नाम लेने का निर्देश दिया गया था। इससे स्पष्ट होता है कि स्त्रियां मंत्रविद्र और पंडिता होती थीं। (4)

हम जानते हैं कि कई शताब्दियों तक हमारा देश आक्रमणकारियों के शासन के कारण बहुत कुछ खो चुका है उसी दौर में भारतीय नारियों की भी दशा - दुर्दशा में बहुत परिवर्तन होता रहा है। यह बता पाना असंभव है कि किस-किस समय में कितना अच्छा और कितना बुरा हुआ परन्तु अंग्रेजों के शासनकाल तक आते- आते स्थिति बहुत ही बिगड़ चुकी थी फिर भी नारियों ने अपनी भूमिका समाज में समय समय पर स्थापित करने का पूरा प्रयास किया है और इसका सुलभ परिणाम भी समाज को मिला है। अंग्रेजी शासनकाल की महत्वपूर्ण भूमिका में रानी लक्ष्मीबाई का नाम सर्वोपरि है जहां अंग्रेजों का सामना करना भारतीय समाज की चुनौति भी उस समय रानी लक्ष्मीबाई का योगदान देशभक्ति और नेतृत्व का प्रतीक बनना, 1857 के स्वतंत्रता संभाग में अंग्रेजों का विरोध करना और महिलाओं के लिए प्रेरणा बनना था। उन्होंने अपने साहस एवं युद्धकौशल से अपने आत्मसम्मान की रक्षा करते हुये देशवासीयों को सर उगकर जिने का जज्बा दिया और समाज की नारियों की आदर्श बनीं। उनका साहस और बलिदान आज भी भारतीय महिलाओं और समाज के लिए शक्ति, स्वाभिमान एवं राष्ट्रप्रेम की प्रेरणा का स्त्रोत है। " रानी लक्ष्मीबाई बहुमुखी प्रतिभा की धनी थीं। वह महान सेनापति, महानशासिका एवं संगठनकर्ता तथा कुशल कूटनीतिज्ञ, बुद्धिमान एवं दूरदर्शी थीं। उन्होंनें अपनी इस बहुमुखी प्रतिभा का 1857 के विशेष्ट में भरपूर उपयोग किया। अंग्रेजों की उस समय की निर्विवाद श्रेष्ठता को जानते हुए भी उन्होंने अंग्रेजों के अत्याचारी एवं अन्यायी शासन को समाप्त करने के लिए न केवल युद्ध का बीड़ा उठाया बल्कि अनेक बार अंग्रेजों के छक्के छुड़ाये । अन्ततः स्वराज्य की प्राप्ति हेतु अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया"। (5)भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय नारी का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारतीय नारी ने पूरे जोर-शोर के साथ स्वतंत्रता संग्राम में हर स्तर पर भाग लिया। गांधी जी के डांडी मार्च व नमक सत्याग्रह में महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया, व गाँधी के मना करने पर भी स्वरूपरानी जेल गई। 1930

के सत्याग्रह में जवाहर लाल नेहरु की माता स्वरूपरानी ने ना केवल खुलकर भाग लिया बल्कि उन्हें अंग्रेज पुलिस की लाठियाँ भी सहनी पड़ी । 1942 में 'भारत छोड़ो आन्दोलन'में अरुणा आसफअली, दुर्गावती, उषा मेहता, दुर्गा देवी सरीखी महिलाओं का योगदान स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। "भारत छोड़ो आन्दोलन' में भाग लेने के लिए कस्तूरबा गाँधी को अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया और उन्होंने अपने प्राण भी जेल में त्याग दिये। 1943 में सुभाष चन्द्र बोस ने भारतीय नारियों से 'आजाद हिन्द फौज' में शामिल होने की अपील की तब लक्ष्मी सहगल के नेतृत्व में 'रानी झाँसी रेजीमेन्ट ' की स्थापना सिंगापुर में हुई। स्पष्ट है कि भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में हर स्तर पर भारत की नारियों ने न केवल पूर्णि रुप से भाग लिया, बल्कि अपने प्राणों का बलिदान भी किया किया।"(6)

आधुनिक काल तक आते-आते महिलाओं की भूमिका समाज में हर क्षेत्र में दिखाई पड़ती है। युद्ध समाप्ति एवं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारियों ने हर कार्य मैं अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने की ओर हर संभव प्रयास किये हैं जिसका लाभ सिर्फ पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर तक ही सीमित नहीं बल्कि राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी देखने को मिलता है। वर्तमान समय में नारियों की भूमिका हर क्षेत्र में शिक्षा विभाग, लघु उद्योग, बृहत उद्योग, कृषि, व्यवसाय, बैंक, खेल जगत, चिकित्सा जगत, प्रशासनिक क्षेत्र एवं अनुसंधान के क्षेत्र में भी एक निश्चित संख्या में है। इन क्षेत्रों में स्त्रियों ने अपना कौशल प्रस्तुत करके अपने देश का नाम रौशन किया है।" एथलेटिक्स में पी टी उषा, अंजू बॉबी जार्ज, हिमा दास, दुति चंद, कर्णम मल्लेश्वरी, स्वमा बर्मन, और कृष्णा पूनिया।" "पी बी सिन्धु (बैडमिंटन) एम सी मैरीकॉम (मुक्केबाजी) साइना नेहवाल (बैडमिंटन) सानिया मिर्जा (टेनिस) मीराबाई चानू (भारोत्तोलन) साक्षी मलिक (कुश्ती) और मिताली राज (क्रिकेट)।(7) इन सभी ने अपनी उपलब्धियों से खेल और देश का नाम रौशन किया है। इसकी भागीदारी वर्तमान समय में बढ़ती जा रही है। इसके अतिरिक्त विज्ञान के क्षेत्र में भी कई उदाहरण मिलते हैं ऐसे कितनी नारियों की भूमिका इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। जिसमें कुछ का नाम यहाँ उल्लेखित है:- टीके अनुराधा,एन वालारमति, वी आर ललितांबिका, सीता सोग सुन्दरम नंदिनी हरिनाथ, मीनल रोहित, मौमिता दत्ता आदि ।

इस प्रकार कई अन्य विभाग हैं.जहां समाज की नारियों इस देश के विकास के लिए अग्रणी भूमिका निभा रही हैं, सभी का उल्लेख इस जगह करना असंभव है फिर भी यह कहना उचित होगा की :-" नारियों का सैलाब, जिस ओर उमड़ जाता है, इतिहास गवाह है, इतिहास बदल जाता है।"(8)

स्त्री वास्तव में साक्षात् शक्ति है। उसमें बल है, धैर्य है, आत्मविश्वास है। समाज के संतुलित, सस्यक और स्वस्थ विकास के लिए वह बहुत कुछ करती है। लेकिन हमारे देश की सामाजिक विडम्बना यह है कि वह स्त्री को देवी की तरह पूजता है और वस्तु की तरह उसका उपभोग भी करता है। स्त्री के ये दोनों रूप न तो सामान्य हैं और न स्वीकार्य ।

समस्याएँ:-इतनी सारी भूमिकाओं को देखते हुए इस बात से नजर नहीं चुराई जा सकती कि नारियों को हर युग में अनगीनत समस्याओं का सामना भी करना पड़ता होगा। समस्याएँ तो हर क्षेत्र में हैं परन्तु मूल समस्या उनके अस्तित्व के पहचान को लेकर है। आज की नारी जिन-जिन मुकामों को हासिल कर रही है उसके पिछे अनेक समस्याओं से उसे जूझना पड़ता है। अभी तक के प्राप्त प्रमाणों से सिद्ध है कि नारी सदैव कुशल, कर्मठ, योग्य, साहसी एवं हर कार्य में दक्ष रही है। "फिर भी स्त्री 'अबला क्यों कहलाई 2 बीमारियों की अधिक शिकार क्यों होती हैं स्त्रियाँ 2. उनका सामाजिक, शैक्षणिक, मानसिक विकास कम क्यों हुआ 2 उन्हें पुरुषों से कम दिमाग, कमतर सोच रखने वाली क्यों माना गया 2. क्यों प्राचीनकाल की विद्या की देवी सरस्वती, धन की देवी लक्ष्मी और बल की देवी दुणी समय पर देवताओं की मदद के लिए भी आगे आकर, मध्यकाल में दोयम दर्जे की मनुष्य बन गई।"(9) इन प्रश्नों के उत्तर में हमें सामाजिक विज्ञान में खोजने होंगे। समाज की प्रथम इकाई परिवार को माना गया है एक स्त्री की समाज में क्या जगह है इससे पहले परिवार में उसकी क्या जगह है इस बात पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। समस्या की जड़ परिवार से

ही शुरू होती है। एक स्त्री को अपने परिवार से बाहर निकलने के लिए भी कई विरोधों का सामना करना पड़ता है उसे शिक्षित होने के लिए, अपने कौशल को सीखने के लिए खुद को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई तरह के प्रयास करने पड़ते हैं। वर्तमान समय में सरकार जब महिलाओं को शिक्षा की सुविधा, आर्थिक सहायता, सामाजिक समानता एवं अन्य सुविधाएँ दे रही है फिर भी महिलाएं स्वतंत्र रूप से इसका लाभ नहीं उठा पा रहीं हैं। उसका कोई फैसला उसका नहीं होता। अनगीनत विरोधों को क्षेलकर कोई स्त्री शिक्षित हो भी जाए तो घर और समाज आज भी उसकी आत्मनिर्भरता को द्वितीयक आवश्यकता के रूप में देखता है लेकिन यह एक सामाजिक तथ्य है कि परिवेश कैसा भी हो, स्वअर्जित गुणों और अधिकारों से संपन्न स्त्रियों की स्थिति समाज में हमेशा बेहतर रही है। घरों में भी, घरों से बाहर भी। किन्हीं घरों में वे कर्ता - धर्ता हैं। अपनी अस्मिता के साथ अपनी स्वतंत्रता भी बचाए हुए हैं। परन्तु जनसंख्या के अनुपात में इनकी संख्या काफी कम है। " यह सत्य है कि हमारे यहाँ ऐसी सुशिक्षिता स्त्रियाँ कम है जो शिक्षा के क्षेत्र में तथा घर में समान रूप से उपयोगी सिद्ध हो सकती हों, परन्तु यह भी कम सत्य नहीं कि हमनेउनकी शक्तियों को नष्ट भ्रष्ट कर उनके जीवन को पंगु बनाने में कोई कसर नहीं रखी।"(10)

विकास के रास्ते को अवरुद्ध करने में आर्थिक समस्या भी नारियों की समस्या है। स्वतंत्र निर्णय के लिए आर्थिक स्वतंत्रता भी मायने रखती है। दाम्पत्य जीवन में यदि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती है तो परिवार में उसका मूल्य बढ़ जाता है घर के सदस्य भी उसके फैसले को मानते हैं। आज के समय में काफी संख्या में स्त्री घर से बाहर काम करके अर्थोपार्जन कर रहीं है और परिवार एवं क्यों पर खर्च में अपना सहयोग कर रही हैं। महिलाओं की आर्थिक आत्म निर्भरता समाज में उनके मूल्यों को बढाने में काफी मददगार साधित हो रही है। इसलिए परिवार के साथ-साथ समाज का भी यह दायित्व है कि वे नारियों के गुणों के विकास में सहयोग करे और उनके कौशल को बढ़ावा दे ताकि ये इनके आधार पर खुद को आत्म निर्भर बना सकें। " समाज ने स्त्री के सम्बन्ध में अर्थ का ऐसा विषम विभाजन किया है कि साधारण श्रमजीवी वर्ग से लेकर सम्पन्न वर्ग की स्त्रियों तक की स्थिति दयनीय ही कही जाने योग्य है। वह केवल उत्तराधिकार से ही वंचित नहीं है, वरन् अर्थ के सम्बन्ध में सभी क्षेत्रों में एक प्रकार की विवशता के बन्धन में बंधी हुई है। कहीं पुरुष ने न्याय का सहारा लेकर और कहीं अपने स्वामित्व की शक्ति से लाभ उठकर उसे इतना अधिक परावलम्बी बना दिया है कि वह उसकी सहायता के बिना संसार-पथ पर एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकती।"(11)

ऐसी समस्याएँ जो किसी स्त्री के विकास को अवरुद्ध करने का कारण बनते है उन समस्याओं की ओर समाज का ध्यान ही नहीं जाता बल्कि कुछ बुद्धजीवी लोग तो उसे समस्या ही मानने को तैयार नहीं होते। जबकि इन समस्याओं से जुझना एवं इससे लड़कर खुद को साबित करना हर नारी के जीवन का संघर्षभरा और बहुत ही जटील कार्य होता है। भारतीय समाज में नारियों की समस्याएँ इतनी उलझी हुई है कि उसे मुख्य बिंदू में इंगीत कर दूर करना इतना आसान नहीं है। फिर भी आवश्यकता है कि इन पर समाज का ध्यान आकर्षित कराया जाय एवं इसके समाधान की ओर अग्रसर हुआ जाय ।

समाधान :- भारतीय समाज की कई सारी समस्याओं का समाधान शिक्षा है। किसी भी देश की वास्तविक प्रगति का आधार शिक्षा होती है। हमारे यहाँ कुछ महिलाएं प्राथमिक शिक्षा के उपरान्त ही अध्ययन का अन्त कर देती हैं, कुछ माध्यमिक के उपरान्त । इनमें कुछ ही महिलाए उच्च शिक्षा के ध्येय तक पहुंच पाती हैं जहाँ पहुंचने के बाद उनकी इच्छा और शक्ति दोनों ही समाप्त हो जाती है। आवश्यकता है इन्हें प्रेरित करने की ताकि इनका शिक्षा के प्रति संकल्प युद्धछ बन सके। इसके लिए प्राथमिक स्तर से ही शिक्षकों एवं समाज के शरा प्रोत्साहित कर शिक्षा को सर्वोपरि बनाने की समझ को विकसित करना होगा। जब महिलाएं स्वयं जागरन्क होगी तभी वे शिक्षा के महत्व को समलेंगी। जब तक वे मनुष्यता की सीदी तक कहा नहीं पहुँच जाती तब तक अक्षर ज्ञान केवल अक्षर ज्ञान रहेगा। "जीने के लिए ही शिक्षा की आवश्यकता है, परन्तु जो व्यक्ति जीना ही नहीं जानता उससे न संसार को कुछ लाभ हो सकता है और न वह

शिक्षा का कोई सदुपयोग ही कर पाता है।"(12)शिक्षित महिला ही शिक्षित समाज का निर्माण करती है, जब एक महिला शिक्षित होती है, तो वो दो परिवारों को शिक्षित करती है। समाज में महिलाओं की भी उतनी ही भूमिका होनी चाहिए जितनी की पुरुषों की। "बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर का मानना था कि स्त्री तथा समाज की उन्नति, शिक्षा के बिना नहीं हो सकती। सुन्दर और सुशिक्षित व सभ्य परिवार के लिए आवश्यक है कि पुरुषों के साथ-साथ घर की स्त्रियाँ भी पढ़ी-लिखी हो ताकि वे समाज परिवर्तन की प्रक्रिया में शामिल हो सकें। समाज के परिवर्तन द्वारा ही स्त्रियों का विकास सम्भव है।" (13) स्त्रियों में जो अन्धविश्वास, धर्माडंबर के प्रति मिथ्या विश्वास, अतिशय आभूषण प्रेम, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, अस्पृश्यता बोध आदि है उन्हें शिक्षित महिलाएं ही दूर कर सकती हैं।

महिलाओं की समस्याओ को संवेदनशीलता के साथ समझने की जरूरत है, तथा घरेलू हिंसा, बाल विवाह, यौन शोषण, स्वास्थ्य, दहेज प्रथा आदि समस्याओं को दूर करने के लिए सरकार द्वारा जो कानून बनाये गये या अन्य महिला अधिकार सम्बन्धी जो अधिनियम हैं उनसे अवगत कराके समाज की महिलाओं को जागरुक करने की आवश्यकता है। यदि हम अपने आस-पास फैले इस तरह के उदाहरणों को सामने रखकर, शोध के तहत् कुछ निषकर्षों तक पहुँच पाये तो वे समाधान निश्चित ही समाज को एक सकारात्मक दिशा की ओर ले जायेंगे। आधुनिक काल में समय-समय पर कई प्रयास किये गये हैं जिनके करा कई कुरीतियों एवं प्रथाओं को समाप्त करने में काफी मदद मिली है। स्वतंत्र भारत में बहुत हद तक इन प्रथाओं को समाप्त करने का प्रयास किया गया है। इससे पूर्व भी कई समाज सुधारको द्वारा इसकी पहल की जा चुकी है। राजा राम मोहनराय, स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती सरस्वती, केशवचन्द्र ऐसे कई महान लोगों ने समाज की प्रथाओं को समाप्त करने में अपना पूरा जीवन खपा दिया। इनके अतिरिक्त महिला समाज सेवी संस्थाओं ने भी इस पर भरपूर कार्य किया है।

आज की स्त्री को सामाजिक या राजनैतिक स्वतंत्रता से ज्यादा दैहिक और मानसिक स्वतंत्रता की, आवश्यकता है। स्त्री को स्वतंत्रता चाहिए समाज की रुढियों से, पुरुषों की दरोहरी मानसिकता से सामाजिक सोच की उस मानसिक सनक से जो स्त्री को विशेषकर मध्यवर्गीय स्त्री बिद्रोह तो करती है लेकिन वह अपनी परम्परा से, जीवन मूल्यों से, पारम्परिक स्त्रीत्व की खोल से बाहर नहीं निकल पाती है। इस तरह की महिला वर्ग को आगे बढ़ाने में सरकार के साथ समाज का योगदान भी आवश्यक है।

निष्कर्ष:- भारतीय समाज का इतिहास हो या वर्तमान समय हर युग में नारियों की भूमिका प्रमुख रहीं है। नारी के बिना हम विकसित समाज की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। इनकी भूमिका सिर्फ परिवार और बच्चों तक ही सीमित नहीं रह गई है। उनकी भूमिका हर क्षेत्र में देखी जा सकती है। हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज होने के कारण नारियों के योगदान को सहज ही लेता है। कार्य तो सदियों से होते आ रहे हैं। परन्तु इनका सही आंकलन और मूल्यांकन इक्कीसवी सदी में कुछ ज्यादा होने लगा है अच्छा है, जब से शुरुआत हो तभी से हम सुधार की ओर अग्रसर हो रहे हैं प्राचीन और वर्तमान की भूमिकाओं में कई अंतर देखने का कार्य घर तक को मिलते है। पहले जहाँ स्त्रियों सीमित च्या वहीं आज के दौर में उनका योगदान हर क्षेत्र - शिक्षा विभाग, चिकित्सा विभाग, खेल जगत, राजनीतिक क्षेत्र, प्रशासनिक क्षेत्र, औधोगीक क्षेत्र, कृषी, खेल जगत, व्यवसायिक क्षेत्र एवं विज्ञान में भी देखने को मिलता है या यूं कहे कि ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ महिलाएँ अपना कौशल व साबित करने में योग्य नहीं है। आधुनिक दौर में महिलाओ की भूमिका हर जगह द्दष्टव्य है।

संदर्भ सूची:-

1. अक्षर वार्ता, संपादक - शैलेन्द्र कुमार शर्मा, अप्रैल-2021 पृ0 सं0-36.
2. वहीं, पृ0 सं0-37.
3. श्रृंखला की कड़ियो, महादेवी वर्मा, पृष्ठ सं0-12.

4. https: //www. inspira journals.Com.
5. https://www.iosr journals. Org.
6. अक्षर वार्ता, सं0 शैलेन्द्र कुमार शर्मा, अप्रैल-2021, पृ. सं0-38.
7. https: // www.kreedarn.Com.
8. अक्षार बाती, संठ शैलेन्द्रकुमार शमी, अप्रैल-2021, 50 सं0-31.
9. स्त्री- सरोकार, आशारानी व्होरा पृष्ठ सं0.28.
10. श्रृंखला की कड़ियाँ, सहादेवी वर्मा, पृष्ठ सं0-58.
11. श्रृंखला की कड़ियाँ, महादेवी बी, पृष्ठ सं0-14.
12. वहीं पृ0 सं0-99.
13. चौखट पर स्त्री, संपादक - संजीव चंदन (4) पृ. सं0-51.

•